महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात

की

पीएच. डी.(हिन्दी)उपाधि हेतु

Executive summary

शोध संक्षेपिका

<u>शोध शीर्षक</u>

नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध: आयाम

अनुसंधित्सु

कृष्ण देव तिवारी

हिन्दी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा

<u>शोध निर्देशक</u>

प्रो. शन्नो पाण्डेय

हिन्दी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा,वड़ोदरा, गुजरात

अनुक्रमणिका

क्रम	विगत	पृ.संख्या
प्रथम अध्याय	**नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व**	1-90
	(1)व्यक्तित्व (2)जन्म (3)पारिवारिक जीवन (4)शिक्षा एवं परिवेश (5)विवाह एवं वैवाहिक जीवन (6)नौकरी एवं व्यवसाय (7)व्यक्तित्व के अंतरंग एवं बहिरंग पक्ष (8)पुरस्कार और सम्मान **नासिरा शर्मा का कृतित्व परिचयात्मक विवरण :** (1)उपन्यास (2)कहानी संग्रह (3)विशिष्ट कहानियाँ (4)स्त्री विमर्श परक लेख (5)अनुवाद, डायरी और रिपोर्ताज (6)सीरियल लेखन संस्करण और विमर्श	

	(7)संदर्भ सूची	

द्‌वितीय अध्याय	**स्त्री संवेदना की अवधारणा**	91-138
	(1)संवेदना का आशय **(2)**संवेदना अर्थ और परिभाषाएँ **(3)**संवेदना का क्षेत्र विस्तार **(4)**संवेदना और साहित्य में अंतरसंबंध **(5)**संवेदना और नारी मन (6)निष्कर्ष **(7)**संदर्भ सूची	
तृतीय अध्याय	**स्वातंत्रयोत्तर कथा साहित्य में स्त्री संवेदना का विकासएक सर्वेक्षण :**	139-190
	प्रमुख महिला कथाकारों के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना **(1)**स्वातंत्रोत्तर कथा साहित्य में स्त्री संवेदना की भूमिका **(2)**कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना	

	(3)मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना **(4)**मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना **(5)**मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना **(6)**ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना **(7)**मृणाल पांडे के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना **(8)**प्रभा खेतान क्षमा शर्मा एवं अन्य प्रमुख लेखिकाओं के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना का सर्वेक्षण (9)निष्कर्ष (10) संदर्भसूची	

चतुर्थ अध्याय	**नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना**	191-264

	(1)उपन्यास की विकास यात्रा **(2)**'सात नदियां एक समंदर' उपन्यास में स्त्री संवेदना **(3)**'शाल्मली' उपन्यास में स्त्री संवेदना **(4)**'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में स्त्री संवेदना (5)निष्कर्ष **(6)**संदर्भसूची	
पंचम अध्याय	**नासिरा शर्मा के कहानियों में स्त्री संवेदना**	265-372
	(1) कहानी की विकास यात्रा (2) पत्थरगली (3) संगसार (4) इब्नेमरियम (5) शामी कागज (6) सबीना के चालीस चोर (7) खुदा की वापसी (8) गूंगा आसमान (9) इंसानी नस्ल (10) 'बुतखाना' कहानी संग्रह में स्त्री संवेदना	

	(11)निष्कर्ष (12)संदर्भसूची	
	उपसंहार	373-384
	संदर्भ ग्रंथ सूची	385-397

Executive summary

भाव और संवेदना वह तत्व हैं जो साहित्य सृजन का माध्यम बनते हैं किन्तु साहित्य की अभिव्यक्ति भाषा पर आधारित है | साहित्यिक अभिव्यक्ति के मामले में हिन्दी भाषा अत्यंत समृद्ध है और नित नवीन कलेवर के साथ अग्रसर भी है | विकास के इसी क्रम में आदिकाल ,भक्तिकाल ,रीतिकाल आधुनिक काल से गुजरते हुए हिन्दी भाषा का साहित्य विमर्शों के युग में प्रवेश करता है जहाँ उसे प्रमुखतः स्त्री विमर्श और दलित विमर्श के कलेवर से अलंकृत होने का सौभाग्य प्राप्त होता है | चूँकि प्रस्तुत शोध प्रबंध का शीर्षक “नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम” है जो की महिला लेखन से जुड़ा हुआ है| महिला कथा साहित्य लेखन एवं लेखिकाओं की एक लंबी सूची है जिनमें से नासिरा शर्मा का कथा साहित्य आलोच्य शोध के केंद्र में विश्लेषित करना ही मेरी इच्छा थी कारण कि नासिरा शर्मा के उपन्यासों एवं कहानियों में अन्य स्त्री लेखिकाओं की भांति सिर्फ स्त्री-विमर्श को बढ़ावा देकर यश प्राप्ति की लालसा मात्र नहीं दिखती बल्कि नारी संवेदना एवं सिकन की व्यापक मनोभूमि पल्लवित एवं पुष्पित होती जान पड़ती है | नासिरा शर्मा हिन्दी की नामचीन लेखिका हैं| नारी संवेदना परक उपन्यास और कहानी संग्रह इनके साहित्यिक अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम हैं | एक सशक्त विधा के रूप में स्त्री-विमर्श का गहरा रिश्ता समाज में लोकसंवेदन दृष्टि के विकास से है | आधुनिक परिदृश्य में साहित्य का सृजन स्त्री आकांक्षाओं, संवेदनाओं एवं उसके मार्मिक पक्षों की अवमानना करके संभव नहीं है | फिर एक कथाकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती होती है अपने समय की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का प्रश्न| श्रेष्ठ कथा साहित्य में जीवन के यथार्थ का ताप और गतिशीलता होती है | स्त्री संवेदना से मुंह फेरकर जीवन की गतिशीलता का मानचित्र हम साहित्य में नहीं खड़ा कर सकते| कमोवेश स्त्रीत्व एवं स्त्री के अस्मिता की पहचान स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वतंत्रोत्तर कथा साहित्य में परिलक्षित होता है,परंतु इस कैनवास पर नारी स्वतंत्रता की वायवीयता बहुतायत मात्रा में दृष्टिगोचर होता है लेकिन

वास्तविक स्त्री अस्मिता की खोज,उसकी वैचारिक स्वतंत्रता का स्वर हिन्दी की ख्यातिलब्ध लेखिका नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में परिलक्षित होता है|

स्वतंत्रता पूर्व स्त्री-विमर्श पर कलम चलाने वाली लेखिकाओं में बंग महिला ,महादेवी वर्मा ,शिवरानी देवी ,उषा देवी मित्रा ,सत्यवती मालिक ,कमला चौधरी , सुभद्रा चौहान , होमवती देवी , चन्द्रकिरण सोनरेक्सा इत्यादि लेखिकाओं ने सहानुभूति परकता से निजात पाकर स्वानुभूति परक स्त्री लेखन को चलन में लाने की सफल कोशिश की किन्तु स्वतंत्रता के बाद जो स्त्री लेखन पर कार्य हुआ वह वास्तव में साहित्य को शिखर पर स्थापित करने में अपनी महती भूमिका निभाई| उनमें से एक नाम नासिरा शर्मा का भी आता है जिनके कथा साहित्य के कुछ प्रमुख उपन्यासों एवं कहानियों में 'स्त्री - विमर्श' के स्थान पर 'स्त्री संवेदना'का स्वर ज्यादा मुखर हुआ है

|पूर्व में जो शोध कार्य नासिरा शर्मा के साहित्य पर हुए हैं उनमें स्त्री विमर्श को केंद्र में रखकर औरत के हक और अधिकार उसकी समस्याओं को दया के भाव से देखकर सदासयता प्रकट किया गया है यथा -

(1)नासिरा शर्मा के साहित्य में नारी विमर्श (डॉ राखी मौर्या)
(2)नासिरा शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व (डॉ विजय राउत)
(3)नासिरा शर्मा एक :मूल्यांकन (संपादक -डॉ फ़िरोज खान)

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य में स्त्री को पूजनीय बताया गया है| उसे देवी, लक्ष्मी,दुर्गा आदि अलंकरणों से अलंकृत किया गया है| इतना ही नहीं स्वयं महिला कथाकारों ने भी उसके हक और अधिकार को केंद्र में रखकर अपनी लेखनी का लोहा मनवाया है जिनमें से एक नाम नासिरा शर्मा का भी है| नासिरा शर्मा अपने कथा साहित्य में शोषित स्त्री के संवेदनाओं को जागृत कर उसे स्वयं अपनी लड़ाई मर्यादा और विवेक के साथ लड़ने और उचित निर्णय लेकर भारतीय संस्कृति के संरक्षण का दारोमदार औरत के जिम्मे सुपुर्द करने की कवायद करती नजर आती हैं, कारण की औरतें ;पुरुषों से ज्यादा संवेदनशील एवं सहनशील होती हैं| लेखिका अपने उपन्यास 'सात नदियां एक समंदर',

‘शाल्मली’, ‘ठीकरे की मंगनी’एवं दस-बारह कहानी संग्रहों के कई कहानियों में नारी को राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, वैवाहिक, रोजगार की समस्या, राष्ट्र की सुरक्षा, वैश्विक संकट आदि!विभिन्न आयामों के प्रति संवेदनशील पाया है और उन्ही पात्रों को साहित्य के यथार्थ धरातल पर अंकित करने की सफल कोशिश भी की हैं| आलोच्य शोध प्रबंध में मैंने नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के अंतर्गत उसके अवदान पर बल दिया है| उपरोक्त पैराग्राफ में जिन - जिन बिंदुओं को दिखाया गया है वही मेरे इस शोध शीर्षक की नवीनता का प्रमाण है|

“नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम” शोध विषय की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए नासिरा शर्मा के उपन्यासों एवं कहानियों में स्त्री संवेदना की चर्चा करना उचित था क्योंकि विषय की व्यापकता उनकी उपलब्धियों से जुड़ती हैं| इस विषय पर केंद्रित उपन्यासों एवं कहानियों में नारी जीवन से जुड़े सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक,आर्थिक, सांस्कृतिक मुद्दों को पहचानकर संवेदनात्मक स्तर विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है| मुख्य विषय के साथ ही स्वतंत्रता के बाद की महिला कथाकारों के प्रमुख कथा साहित्य को जो नारी संवेदना के विकास को रूपायित करते हैं, उनके विकास को भी यथासंभव सामिल करने का प्रयास किया है|

नासिरा शर्माः साहित्यिक चिंतन एवं कृतित्व

नासिरा शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद शहर में २२ अगस्त १९४८ ई. को हुआ | उनके पिता जामिन अली उर्दू के प्रोफेसर तथा माता नाजनीन बेगम एक सफल गृहणी थीं। परिवार में सबसे छोटी संतान होने के कारण नासिरा का बचपन बेहद लाड़-प्यार में गुज़रा। सात वर्ष की उम्र में उनके पिता जी का देहांत हो गया। इस पारिवारिक संकट के बाद उनके संपूर्ण उत्तरदायित्वों का पालन उनकी माता ने किया। नासिरा शर्मा बचपन से ही कुशाग्र और विचारवान प्रवृत्ति की थीं। नासिरा जी का साहित्य विविध वर्गीय है | चरित्र की अंतरात्मा में उतरना उन्हें बखूबी आता है। शाल्मली के चरित्र का

विकास अनेक छबियों में साकार रूप में आबद्ध है, तो ठीकरे की मंगनी की 'महरूख' अपने आधुनिक मगर स्वतंत्र वजूद के लिए लडती स्त्री के रूप में भी उतनी ही जीवंत है। नासिरा शर्मा ने अक्सर अनेक मुद्दों पर खुली चर्चा के दौरान यह स्वीकार किया है कि वे आधुनिकता के नाम पर स्त्री स्वच्छन्दता की पक्षधर नहीं हैं। वे हर हाल में विवाह और परिवार को बनाये रखने में विश्वास रखती है, अगर एक बार में आधार खंडित हो जाये तो नयी पीढ़ी फैशन के नाम पर अनेक विकृतियों एवं असाध्य रोगों की शिकार हो जाएगी, जिसका प्रभाव समाज पर दूरगामी रूप से स्वस्थ नहीं होगा | इसलिए उनके नारीपात्र इतने आवेशी नहीं हैं। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से जो मकसद, जो उद्देश्य, जो आत्मा किसी रचना को दी है वह हर हाल में बरकरार रहनी चाहिए। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से गंगा-जमुनी संस्कृति का अद्भुत संगम है। जितने जीवंत उनके हिन्दू-पात्र, परिवेश और संस्कृति है उतने ही जीवंत मुस्लिम पात्र, परिवेश और बोली-बानी है| बोल- चाल, खान-पान, भाषा-बोली के रंग भले ही अलग हों, मगर सबके अन्दर एक इंसान का दिल धड़कता है, अपने समय और समाज को जीते हुए सब पहले इंसान हैं, फिर कोई और पहचान है।

बकौल नासिरा शर्मा- “मैं सरहदों को नहीं पहचानती मेरी नज़र में सभी इंसान बराबर हैं।” उनकी संवेदना पर कहीं का भी इंसान अगर दस्तक देता है तो वहाँ उनकी कहानी का दरवाज़ा खुल जाता है। चाहे वहाँ 'जैतून के साये' का तौफीक हो या 'पुले सरात' का हसन | इसमें संदेह नहीं की उन्होंने नयी दिशायें और और वैचारिक ज़मीन पर संवेदना से भरे चरित्र दिए हैं, जिसने हिंदी पाठक को चौकाया और गहरे प्रभावित भी किया। नासिरा जी की वैश्विक दृष्टि ने हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाया है। वह केवल निडर, साहसी, ईमानदार लेखिका ही नहीं बल्कि हिंदी भाषा साहित्य में उनका सृजनात्मक पत्रिका में योगदान महत्त्वपूर्ण माना जायेगा। विशेषकर जब वह सीमापार ‘अफ़ग़ानिस्तान: बुजकशी का मैदान', जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं, मरजीना का देश

: इराक, जैसी रचना साहित्य को समर्पित करती हैं। नासिरा शर्मा ने अपने 'आत्मतर्पण' (हंस १९९२) में एक जगह लिखा है कि यदि मैं शर्मा जी से शादी न करती तो आधी दुनिया ही देख पाती | नासिरा शर्मा ने साहित्य की विभिन्न धाराओं पर बेबाकी से लिखा | उन्होंने कहानी, उपन्यास, अनुवाद, लेख, रिपोर्ताज, बाल-साहित्य, संपादन, नाटक, साक्षात्कार इत्यादि विधाओं पर लेखन किया है।

नासिरा शर्मा का उपन्यास साहित्य स्त्री को बन्धनों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है। परिवार तथा समाज द्वारा लादे गये बन्धनों को ठुकराने की क्षमता उसने प्राप्त कर ली है। मुस्लिम समाज में पहले लड़कियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने नहीं दिया जाता था, किन्तु अब परिस्थति बदल रही है। ठीकरे की मंगनी उपन्यास की नायिका 'महरुख' की पढाई को लेकर भी परिवार में तनाव रहता है, किन्तु उसकी अम्मी स्पष्ट रूप से कहती है- “मैं औरत हूँ अच्छी तरह से जानती हूँ, खूब अच्छी तरह से जानती हूँ कि इस नए दौर में औरतों के लिए मजबूती क्या होनी चाहिए। लड़की अच्छा-बुरा सोचे यह अक्ल तो तालीम ही दे सकती है।” महरूख का मंगेतर 'रफत' उसे जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदैव प्रेरित करता रहता है।

सात नदियाँ एक समंदर उपन्यास में स्त्री पर होने वाले यौन शोषण, का बेबाक चित्रण किया गया है। इस उपन्यास की नायिका 'तैयबा' वर्तमान सत्ता की विरोधक है, अतः उसे कैदखाने में तमाम तरह की यातनाएं दी जाती हैं। उसका यौन शोषण किया जाता है। “अपने को कमरे में तनहा पाकर तैयबा को जैसे होश आया। नंगा शरीर बिजली की रौशनी में चमक रहा था। उसे अपने शरीर से नफरत होने लगी। यह नारी का शरीर सिर्फ भोगने के लिए है,चाहे प्रेम से चाहे तिरस्कार से।”

स्त्री चेतना के ये बिन्दु इस बात की पुष्टि करते हैं की स्त्री सदियों से चले आ रहे अन्याय और शोषण के विरुद्ध उठ खड़ी होने के लिए तत्पर हैं।

अक्षयवट उपन्यास में भी स्त्री के यौन शोषण का घृणित रूप सामने आया है। स्त्री के साथ भेद-भाव की नीति उसके जन्म से पूर्व ही प्रारंभ हो जाती है। नासिरा शर्मा ने स्त्रियों के साथ होने वाले भेद-भाव का चित्रण बखूबी किया है। लड़की को बोझ समझकर शाल्मली की माँ अपने पति से उसके लिए जल्द ही वर की तलाश के लिए कहती है- “जवान लड़की जिस घर में बैठी हो तो किस माँ को नींद आएगी ।” स्त्री की पढाई का कोई मूल्य घर परिवार में नहीं रहता है। समाज की ऐसी मान्यता बन गयी है कि, जब तक विवाह नहीं हो जाता, तब तक लड़कियां पढ़ती रहें- शाल्मली अपने पति से पूँछती है- “तुम सोचते हो कि लडकियां केवल विवाह के लिए पढ़ती हैं? नरेश उससे कहता है- “और नहीं तो क्या? खाली बैठने से तो कहीं अच्छा है कि लडकियां अच्छा पति मिलने की ढंग से प्रतीक्षा करें।” नरेश, शाल्मली की बढती पोजीशन देखकर व्याकुल होता रहता है। पुरुषों की इसी व्याकुलता को स्त्री विमर्शों में नए आयामों के द्वारा रेखांकित करने का कार्य नासिरा जी ने किया है। पुत्री के विवाह के समय भी परिवार वाले उसका रिश्ता तय करते हैं, इसमें उसकी मंशा नहीं पूंछी जाती|

जिन्दा मुहावरे में रहीमुद्दीन कहते हैं- “निजाम लड़का है, अपनी मर्ज़ी का मुख्तार | रज्जो बिटिया हमार मर्जी के तावेदार, जहाँ हाथ थमाएंगे ! ओहि घर रुखसत होइए| विवाह के समय वर पक्ष अधिक आयु कन्या को पसंद नहीं करते, भले ही वर अधिक आयु का हो वे अपने पुत्र के लिए कम आयु की कन्या ढूंढते हैं। इसीलिए अक्षयवट उपन्यास की मौसी कहती है “अरे बेटवा मर्द साठा क पाठा, सच पूँछो तो मर्द बूढा ही कब होता है। औरत तो वीसी की खीसी | " आज भी समाज में तमाम कुंवारी औरतें दिखाई देती हैं, जिनका विवाह उचित आयु में संपन्न न होने के कारण बूढी हो गयी| स्पष्ट है कि स्त्री

के साथ पुरुष की तुलना में भेद-भाव की नीति अपनायी जाती है। उसे पुरुष की अपेक्षा हीन समझा जाता है। नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में स्त्री संवेदना, स्त्री मुक्ति संघर्षों का विस्तार से वर्णन किया है। साथ ही स्त्री-अधिकारों, महिला सशक्तिकरण के कई छुए अनछुए पहलुओं के माध्यम से स्त्री-संवेदना का मानचित्र स्थापित किया है। स्त्रियों की समस्या, संघर्ष एवं पड़ताल करते हुए नासिरा शर्मा के उपन्यासों, कहानियों एवं कथेतर साहित्य के नाम से अभिज्ञानित होना आवश्यक है|

उपसंहार

नासिरा शर्मा हिन्दी महिला कथा साहित्य की अन्यतम कथा शिल्पी हैं। इनका कथा साहित्य हिन्दी साहित्य के मुख्यधारा के लेखकों से किसी भी मायने में उन्नीस नहीं है। महिला कथाकार होते हुए भी इन्होंने सिर्फ आधी आबादी को केन्द्र में रखकर अपनी लेखनी नहीं चलायी बल्कि समाज में घट रहे उन तमाम मुद्दों को अपनी सर्जना का माध्यम बनाया जो मानवता के हित में हों । नासिरा शर्मा ने लगभग आधा-दर्जन उपन्यास लिखे जिनकी विषयवस्तु एकांगी न होकर बहुआयामी है। इनके कुछ उपन्यास पाकिस्तान विभाजन से उपजे पारिवारिक विद्रोह पर आधारित हैं तो कुछ वैश्विक स्तर पर पानी की समस्या से उठ खड़े संकट की परिचर्चा पर आधारित हैं। वहीं 'सात नदियाँ एक समुन्दर', 'शाल्मली' और 'ठीकरे की मंगनी' बिशुद्ध स्त्री संवेदना परक उपन्यास हैं। लेखिका का नारी-मन, स्त्री पात्रों के संदर्भ में विशेषकर कहानियों में ऊभर

कर आता है। इनकी लगभग सभी कहानियों में कमोवेश स्त्री संवेदना का चित्र अंकित हुआ है ।

"नासिरा शर्मा का कथा साहित्य अनुभव के सागर से निकलकर कथा जगत में अवतरित वे एहसास हैं जो स्त्रीवाद और स्त्री-विमर्श को समझने की दिशा में महत्वपूर्ण अध्याय है। उन्होनें सौ से अधिक कहानियाँ, सात उपन्यास, निबंध, रिपोर्ताज आदि लिखा है। जो भारतीय तथा एशियाई व अरब मुस्लिम देशों के समाज के विभिन्न तबक्कों, मध्यम वर्ग, अभिजात्य वर्ग और निम्न मध्य वर्ग की सामाजिक सोच एवं अलग-अलग शैक्षणिक- आर्थिक स्तर के समाज में स्त्रियों की दशा, दिशा, सोच तथा उनके बारे में पुरुष की सोच का खुलासा करती है।" (1) नासिरा शर्मा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे नारी-विमर्श के लिए सोच-समझकर लेखन कार्य नहीं किया वरन, प्राकृतिक रूप से उन्होंने अपनी लेखनी सामाजिक कुरीतियों एवं समस्याओं पर चलायी जो जहाँ जैसी समस्या सामने आती गई उसका निदान उद्देश्यपरक कथासाहित्य को जन्म देता गया। उसी में अधिकतर कहानियाँ और तीन-चार उपन्यास नारी संवेदना से भी लिपटे, सने सर्जित हो गये। विवेच्य कथाकार के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयामों को प्रस्तुत एवं विश्लेषित करना ही इस शोध का प्रमुख विषय रहा है। अत: इसके अंतर्गत प्रमुख रूप से उन्हीं कहानियों और उपन्यासों का विश्लेषण या अनुसंधान हुआ है जिनमे स्त्री-संवेदना की प्रधानता है। अन्य सभी उपन्यासों और कहानियों का परिचयात्मक विवरण प्रथम अध्याय में उल्लेखित है।

प्रस्तुत शोध का शीर्षक है- 'नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम' अतः संवेदना शब्द की उपादेयता एवं अर्थघटन अति आवश्यक है। साहित्य जैसी सुकुमार वस्तु का विनिर्माण ही संवेदना के बिना संभव नहीं है। संवेदना ही वह आन्तरिक भाव है जो व्यक्ति को सुख-दुःखादि का बोध 'कराती है। सर्वप्रथम प्राणीयों के सामने समस्या या साधन प्रस्तुत होता है. उसके पश्चात् वह इन्द्रीय जनित अनुभव द्वारा दुःख अथवा 'प्रसन्नता को अनुभूति करता है, अनुभूतिजन्य विचार जब अभिव्यक्ति पाते हैं तब जाकर संवेदनात्मक साहित्य का सृजन होता है । हिन्दी साहित्य में ऐसी ही अनेक समस्याओं एवं संकटों से संघर्ष करती हुई महिलाओं की कथा-व्यथा वर्णित है, जिसे हम स्त्री-विमर्श के नाम से जानते है। इसी स्त्री-विमर्श की महिला कथाकारों में एक सुप्रसिद्ध नाम नासिरा शर्मा है जिनके कथा साहित्य पर प्रस्तुत शोध संवेदनात्मक रूप से आधारित है।

स्वातंत्रोत्तर महिला कथाकारों में नासिरा शर्मा इस मायने में सबसे अलग व्यक्तित्व रखती हैं कि उनकी सर्जना के माध्यम से नारी-विमर्श की सीमा सरहद के उस पार तक फैली हुई है। लेखिका का यह मानना है कि औरत और मर्द सांवेदिक धरातल पर अलग नहीं हैं, मात्र सोच, शिक्षा, स्वभाव और समझ की सीमा को यदि पुरुष या स्त्री बड़ा बना ले तो समाज में व्याप्त असमानता और अलगाव समाप्त हो जायेगा।

पुरुष प्रधान समाज पीढ़ियों से सत्ता का आदी हो गया है वह औरत से प्रेम तो करता है किन्तु उनको सम्पत्ति की तरह अपने संरक्षण में रखना चाहता

है । भारतीय पुरुष प्रधान समाज की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि यहाँ जब भी कोई मामला औरत से जुड़ा हुआ होता है तो सबसे पहले पुरुष की मर्यादा पर आँच आती है। लेखिका ने अपने तमाम कहानियों एवं उपन्यासों में इस बात को चित्रित किया है। पुरुष; औरत के द्वारा प्राप्त सुविधाएं एवं सम्पत्ति का उपभोग करना चाहता है किन्तु औरत को स्वतंत्र नही छोड़ना चाहता। वह इस बात से हमेशा, सशंकित रहता है कि कहीं उसकी पकड़ ढीली तो नहीं पड़ रही उपरोक्त तथ्य का बड़ा ही यथार्थ उदाहरण नासिरा शर्मा का उपन्यास 'शाल्मली' है। शाल्मली उपन्यास का नायक नरेश 'शाल्मली के द्वारा प्राप्त समस्त सरकारी सुविधाओं का लाभ उठाना चाहता है परंतु औरत को औरत की मर्यादा में रहने की हिदायत हमेशा शाल्मली को देता रहता है। स्त्री, पुरुष से कमतर किस मायने में है ? मस्तिष्क, चेतना और शक्ति में नारी आज पुरुषों के साथ कंधों से कंधा मिलाकर चल रही है फिर 'नरेश' जैसी मानसिकता क्यों पनप रही है ? इसका खुला मंच लेखिका पाठकों के सामने अपने कथा साहित्य के माध्यम से पेश करती है। अपनी सर्जना को विमर्श के बाजार में नासिरा नहीं उतारती बल्कि वे संवेदना को महत्व देते हुए कहती है कि - “आज के इस दौर में मेरी अपनी भी जिम्मेदारी है अपने लेखन, समय और उसके वर्ग के प्रति जो पीड़ित है, और इसलिए भी की मैं उसी की एक कड़ी हूँ और यह मेरा कर्तव्य भी है

इसलिए मैं उन सारे कानूनों को जो इन्सान है, विशेषकर औरत के फायदे में आते हैं लब बैंक करती हूँ और अपनी आवाज में पाठकों की आवाज की गूँज सुनने में आशा करती हूँ, जो मेरी तरह इन विचारों से सहमति रखते हैं।"[2]

लेखिका का मानना है कि व्यक्ति की सोच बदलने में शताब्दियां बीत जाती हैं। इसलिए पुरुष प्रधान समाज का औरत के प्रति जो सोच है वह बिल्कुल नहीं बदला जा सकता, परन्तु समय के साथ मनुष्य के स्वभाव में औरत के प्रति तब्दीली जरूर आएगी 'घर, परिवार व्यक्ति, समाज, देश इन सभी की समस्याओं के बारे में नासिरा शर्मा ने बड़ी बारीकी से सोचा है, विचार किया है। लेखिका इन्हीं समस्याओं को केन्द्र में रखकर अपने कथा साहित्य का सर्जन किया है। समय' स्थान, और परिस्थिति के साथ-साथ व्यक्ति की सोच में भी परिवर्तन आ रहा है। यह परिवर्तन पुरुष की अपेक्षा 'स्त्री, में अधिक परिलक्षित हो रहा है। पुरुष पहले भी स्वतंत्र था, आज भी आजाद है। नारी पहले भी पराधीन थी और आज भी पूरी तरह स्वतंत्र नहीं है। कहीं अधिकार और सत्ता की सताई हुई है तो कहीं प्रेम के नाम पर अथवा रिश्तों की मर्यादा के नाम पर छली हुई।

नासिरा शर्मा स्त्री पर नारीवादी आन्दोलन की सीमाओं से बाहर रहकर बृहत्तर राजनीतिक- सामाजिक और संवेदनात्मक परिप्रेक्ष्य में विचार करती हैं। एक कुशल पत्रकार होने के कारण इन्होंने विभिन्न देशों और सम्प्रदाओं की औरतों की संवेदना, संघर्ष और शिकन को नजदीकी से देखा है।

नासिरा शर्मा का मानना है कि स्त्री को अपने स्त्रीत्व की रक्षा स्वयं ही करनी पड़ेगी। पिछले पाँच हजार वर्षों में पुरुष का व्यक्तित्व उतना नहीं बदला है जितना औरत का। यह परिवर्तन ही यथार्थत: सामाजिक चेतना को प्रेरित करता है। ज्ञातव्य है कि हमारी पुरानी पौराणिक, ऐतिहासिक स्त्रियों की महत्वाकांक्षाएँ मुख्यतः पति और पुत्र, परिवार और व्यक्तिगत आकांक्षाओं पर केन्द्रीत थी। आधुनिक युग की सचेत और जागरुक औरत परिवार से जुड़कर लोकहित हेतु कुछ रचनात्मक कार्य भी करना चाहती है। यदि ही किसी स्त्री को जीवनसाथी उसकी इच्छा के विरुध्ध तलाक लेना चाहता हो तो, उसमें इतना आत्मविश्वास होना चाहिए कि घर टूटने को वह व्यक्तित्व टूटने के रुप में लेने से बच सके। दहेज और बलात्कार के प्रसंग में समाज की मानसिकता बदलने आवश्यकता है. समाज कि ये हो दोनों चीजें बड़ी ही संवेदनशील हैं। उपरोक्त परिस्थियों के खिलाफ लड़ने तथा संघर्ष करने के लिए औरत को पुरुष के सहयोग की अति आवश्यकता है। इसीलिए नासिरा शर्मा औरत और मर्द को एक चने की दो दाले मानती हैं, कारण कि वे पुरुष के खिलाफ नहीं हैं। वे समस्या और बेढंग सामाजिक स्ट्रैक्चर के खिलाफ हैं।

नासिरा शर्मा के कथा साहित्य का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि प्रतिहिंसा अथवा बदला लेने की नियति से कोई निर्माण नही हो सकता। वे पितृसत्ता का विरोध करती हैं, पुरुष का नहीं। क्योंकि पुरुष का विरोध अर्थात प्रकृति का विरोध और प्रकृति के साथ क्रूरता अर्थात सर्जनशीलता की अवमानना है, चाहे उसके दायरे में पुरुष आए या स्त्री सत्ता किसी की आवश्यक नही है न

मर्द की और नही औरत की हमारे सामाजिक ढाँचे की खामियों के कारण आज सत्ता पुरुष के हाथ में है जिसके कारण वह सबल है और नारी मुक्ति की आकांक्षी | मेरी समझ से सही नारी- "मुक्ति और स्वतंत्रता, समाज की सोच और नारी स्थिति बदलने में है। बाहर निकलो या घर में रहो हर स्थान पर पुरुष से स्त्री और स्त्री से पुरुष टकराएगा । इसलिए लेखिका व्यक्त नहीं व्यक्ति के कुत्सित विचार और व्यवस्था का विरोध करती है।

स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कथा साहित्य की महिला कथाकार पुरुषों के मुकाबले और पुरुषों की मौजूदगी के बावजूद हिन्दी साहित्य में अपनी रचनाशीलता का लोहा मनवाती रही हैं। उनके संवेदन की गहनता, उनके अनुभव का सीमित किन्तु सार्थक रचना संसार उनकी ममतामयी और मार्मिक जीवन दृष्टि, उनकी अभिव्यक्ति कौशल की विशिष्टता और नारी मुक्ति की मांग ने पाठक को संवेदनात्मक रूप से अपनी तरफ आकर्षित किया; जिसका परिणाम यह हुआ की स्त्री विमर्श परक लेखन की हिन्दी साहित्य में बाढ़ सी आ गई परिणामतः नारी की दबी-कुचली संवेदनाएं साहित्य में अभिव्यक्ति पाने लगी। जिसके कारण लोगों की सोच में स्त्री के प्रति संवेदनशीलता गहरी हुई ।

संवेदनात्मक साहित्य की सर्जना ने पुरुष लेखन के सामने बड़ी चुनौती खड़ी कर दी। इस चुनौती का परिणाम यह हुआ कि नारीवादी विचारधारा और नारी-विमर्शकार पूरी शक्ति से नारी की स्वतंत्रता और उसकी मुक्ति के प्रश्न को केन्द्र में रखकर लेखन करने लगे और साहित्य में सहानुभूति बनाम स्वानुभूति की बहस खड़ी हो गई। परिणामतः स्वातंत्रोत्तर महिला लेखिकाओं की सर्जनात्मक

रचना शैली ने आज के हिन्दी साहित्य की दशा और दिशा को बदल दिया। अब औरत की रचनाधर्मिता पर गृहस्थी का रोना रोने का आरोप नहीं लगता वरन उसके लेखन पर गहरी आलोचना, समालोचना होती है। यही कारण है कि स्त्री-विमर्श की समर्थक लेखिकाएं अब नारी को देहमात्र अथवा उपभोग की वस्तु समझने की अवधारणा का विरोध करती हैं। बंगला-देश की स्त्रीत्ववादी लेखिका 'तसलीमा नसरीन' लिखती है- "दुनियाँ में सब कुछ भोग्य सामग्री है और दुनिया का सर्वोत्तम सामग्री है स्त्री । विनिमय वस्तु के बतौर मूल्यवान दास के रूप में कीमती सामग्री के रूप में समाज में नारी का स्थान है। "[3]

नासिरा शर्मा स्त्री संवेदना परक लेखन की सशक्त हस्ताक्षर है -यह कहना गलत न होगा, क्योंकि उन्होंने ही नारी संवेदना और शिकन को शहरी वातावरण से प्रसारित करते हुए गाँव की सीधी-सादी महिलाओं की संवेदना को साहित्य में स्थान दिलाने की सफल कोशिश की हैं। इन्होंने स्त्री-विमर्श के तहत पितृसत्तात्मक मूल्यों, दोहरे नैतिक मापदण्डों, यौन कुण्ठा, लिंग भेद की अवैचारिक राजनीतिक व सामाजिक मान्यताओ, धारणाओं एवं अंतर्विरोधों की नीव हिला दी।

शताब्दियों से जिस बर्बर व्यवस्था ने नारियों को कदम-दर-कदम रौंदने और उनकी संवेदनाओं को तोड़ने की कोशिश की है, उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को नकारा है, उसकी गरिमा और स्वाभिमान का गला घोंटा है, उस बर्बर व्यवस्था के खिलाफ सशक्त पात्रों की संरचना कर घमासान युद्ध छेड़ा है। अब तक पितृसतात्मक समाज ने स्त्री को मातृत्व, सतीत्व एवं नारीत्व का

महिमा-मंडन कर जिस माया- जाल में फँसाकर चहारदिवारी में बंद कर रखा था, स्त्री संवेदना परक लेखन ने उसी मोहजाल को खण्डित कर दिया । उनकी स्त्री पात्र आचारण की पैतृक मर्यादाओं और खोखली परंपराओं की सीमा का अतिक्रमण करती नजर आती है। उनकी स्त्रीयाँ तन-मन से स्वतंत्र नारी अस्मिता एवं निर्णय की मांग करती हैं। नासिरा शर्मा ने जिस साहसिकता एवं निर्भीकता से । 'ठीकरे की मंगनी' 'शाल्मली' और 'बहिस्ते जहरा ' उपन्यास लिखा है, वैसा शायद ही कोई महिला कथाकार लिख पाया हो । उपरोक्त उपन्यास नारी के स्वतंत्र एवं निर्भीक निर्णयों के ऐसे दस्तावेज हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी आने वाली स्त्री संतति को यह पाठ 'पढ़ाती रहेगी कि पूरे ईमानदारी से जो भी महिला साहसिक और स्वतंत्र निर्णय लेने हेतु अविलंब प्रस्तुत रहेगी वही सुरक्षित एवं इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण अक्षरों मे अंकित होगी । अन्यथा भेड़, बकरियों सदृश जीवन जीने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

लेखिका के व्यक्तित्व और कृतित्व उनकी रचना शैली एवं बहुज्ञता पर प्रकाश डालते हुए अमरीश सिन्हा लिखते हैं - "समकालीन कथा साहित्य की दुनिया में नासिरा शर्मा की सबसे बड़ी विशेषता विभिन्न अंचलों की भाषा-शैली है। ये अंचल इलाहाबाद, ब्रज-आगरा-कानपुर का, सीमावर्ती प्रदेश, अवध प्रांत और राजस्थान आदि हैं। उन्होंने हिन्दू व मुस्लिम समुदायों के परिवारों में बोली जाने वाली बोलियों और शब्दों का बड़ा ही प्रवाह रूप से प्रयोग किया है। जनवाणी की अधिकारिणी व मखमल जैसी छहलनेवाली साथ ही फर्राटेदार भाषा की धनी नासिरा शर्मा 'स्त्री विमर्श' के ऐसे आयाम प्रस्तुत करती है जो अब तक

हाशिए पर थे। नासिरा शर्मा के पास भाषा वैभव है । वे हिन्दी, उर्दू के अलावा फारसी, पश्तो, अंग्रेजी की अच्छी जानकार है । इसलिए उनका नजरिया, अध्ययन एवं अनुभव फलक काफी विस्तृत है।"[4]

स्वातंत्रोत्तर हिन्दी महिला कथा साहित्य से लेकर समकालीन कथा साहित्य में नासिरा शर्मा एक विवादास्पद एवं विरोधाभाषी व्यक्तित्व और रचनाशीलता की रचनाकार रही हैं किन्तु समस्त महिला कथाकारों में उनका स्थान एवं व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक और महत्वपूर्ण है। इन्होंने अपनी रचनाधर्मिता की बेबाक शैली द्वारा, हिन्दी साहित्य में अपना विशेष पहचान बनाया है। स्त्री संवेदना के संदर्भ में प्रायः कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, मैत्रेयी पुष्पा मृणाल पाण्डे, ममता कालिया, प्रभा खेतान राजी सेठ, मृदुला गर्ग आदि की विशेष चर्चा की जाती है। पर नासिरा शर्मा का साहित्यिक कैनवास उपर्युक्त स्त्री रचनाकारों की तुलना में अधिक विस्तृत एवं सोदेश्यपूर्ण है। कारण कि उनके कथा साहित्य में हिन्दू, मुस्लिम कम्यूनिटी, ईरान, ईराक एवं पाकिस्तान में रह रही नारियों की मानसिक स्थिति, दर्द, छटपटाहट आदि नारी संवेदनापरक भावों एवं चेतनाओं को अभिव्यक्ति मिली है।

विभिन्न जाति, समुदाय, वर्ण एवं वर्ग की स्त्रियों की संघर्षशील जीवन शैली उनके कथा लेखन का प्रमुख केन्द्र है। अन्य महिला कथाकारों का कथा साहित्य ज्यादातर हिन्दू समाज की नारियों उनके दैनांदिक समस्याओं एवं संघर्षो को रूपायित करने में संलग्न जान पड़ते है।

वस्तुतः नासिरा शर्मा वर्तमान समय की सबसे ख्यातिलब्ध रचनाकार हैं। उन्होंने सरहद पार तक के नारी-जाति से सांवेदिक साक्षात्कार किया है। उन्होंने उसकी संवेदना-शिकन, दुःख-दर्द को केवल देखा ही नहीं बल्कि महसूस भी किया है, और अपनी सर्जना में अभिव्यक्ति प्रदान कर समूची स्त्री-जाति के उत्थान हेतु आवाज उठाया है। उनकी निष्ठा संवेदनाओं के साथ है जिसमें बौद्धिक एवं तार्किक, विचारों का पुट परिलक्षित होता है। लेखिका के कथा साहित्य में मानव को मानव द्वारा दी गई पीड़ा की बर्बरता के खिलाफ स्वर बुलंद करने का चित्र सर्वत्र दिखाई पड़ता है। जहाँ प्रताड़ना उत्पीड़न एवं शोषण है, वहाँ नासिरा शर्मा को हम सावधान एवं प्रश्नवाचक मुद्रा में खड़ी पाएंगें। "कहना न होगा कि नासिरा शर्मा का कथा साहित्य मानव मूल्यों, विशेषकर नारी मन को उकेरता है। जिसमें स्त्री-पुरुष संबंधों, पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की दशा-दुर्दशा एवं स्त्री विमर्श का ईमानदारी पूर्वक चित्रण है। कथा साहित्य में विद्रोह की एक परंपरा भी विकसित होती है, जिसका उद्देश्य है-एक व्यवस्था की स्थापना जो पूर्ण रूप से पुरुष प्रधान न हो, स्त्री पुरुष के समान भागीदारी हो, किसी का किसी पर वर्चस्व न हो, आजादी की सुबह हो और इस सुबह की लालिमा से ओत-प्रोत हो हमारा समाज तभी प्रकृति प्रदक्त इन्सानियत की खुशबू से हमारा जगत सुवासित हो सकेगा । इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु नासिरा जी का कथा साहित्य महिलाओं मे नई शक्ति, ललक और हिम्मत भरने की क्षमता भी रखता है।

प्रस्तुत शोध के प्रथम अध्याय में लेखिका के व्यक्तित्व की बहुज्ञता एवं कृतित्व की सीमा का केवल परिचयात्मक विवरण जरूर है किन्तु लेखिका का

निजी व्यक्तित्व उसकी संवेदनात्मक अवस्था एवं जीवन चक्र की महत्वपूर्ण घटनाएं स्पष्ट अंकित हैं, जिसका प्रभाव रचना कर्ता के साहित्य पर भी पड़ता है। नासिरा शर्मा स्वयं इस प्रभाव के प्रवाह में कभी डूबती तो कभी तेरती नजर आती हैं। क्योंकि संवेदनशीलता एक साहित्यकार के लिए सबसे आवश्यक भाव हैं। बस महत्वपूर्ण यह है कि साहित्यकार अपनी इस विशेषता से भली-भाँति परिचित होना चाहिए। इसके लिए संवेदना का अर्थ, परिभाषा एवं क्षेत्र विस्तार का ज्ञान एवं अनुभव होना आवश्यक है। नासिरा शर्मा की बहुज्ञता इस बात का प्रमाण है कि वे संवेदनात्मक रूप से सबल लेखिका हैं। इसका उदाहरण उनकी कहानियों एवं उपन्यासों में वर्णित नारी पात्रों के चरित्र हैं।

स्वातंत्रोत्तर महिला कथाकारों ने हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श का जो चित्र खींचा था वह नारी के हक एवं पितृसत्ता के विरोध से उपजी पुरुष प्रतिशोध का साहित्य जान पड़ता है; जिसमें पुरुष के समस्त क्रिया-कलापों को एक शक के दायरे में रखकर देखा जाता रहा है। प्रतिशोध की भावना से भावित नारी, उत्कर्ष के स्थान पर पतन के गहरे समन्दर में डूबती जा रही थी जिससे मानव मूल्यों का क्षरण एवं आधी आबादी की अस्मिता, स्त्रीत्व समाप्त होने के कागार पर था उसी समय कुछ महिला कथाकारों (मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, क्षमा शर्मा) का उदय संवेदनात्मक साहित्य सृजन के रूप में होता है। स्त्री विमर्श की एकांगी विचारधारा से पितृसत्ता का विरोध करने वाला साहित्य स्वतंत्रता के बाद नारी संवेदना से जुड़कर मूल्यों एवं अस्मिताओं पर बल देने लगा। जिसकी सबसे बड़ी कड़ी नासिरा शर्मा एवं उनका कथा साहित्य है।

समग्र रूप से कहना न होगा की सम्पूर्ण व्यवस्था में जिस आमूल रूप से स्त्री संवेदना के पुर्न मूर्ल्यांकन और विश्लेषण की जरूरत है । इस निर्णय के अधिकार को पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने अभी तक अपने हाथ में रखा है, ऐसी दशा में स्त्री-जाति को बेचैनी, छटपटाहट, चहारदिवारी से बाहर निकलने की अकुलाहट 'स्वाभाविक है और प्रकृति प्रदक्त भी क्योंकि ईश्वर ने औरत मर्द को समान बनाया है केवल शक्लें अलग दी है किन्तु इस मजाजी दुनियाँ के तथाकथित खुदाओं ने प्रकृति; प्रदक्त आजादी को अपनी निजी सम्पत्ति बना रखा है। पुरुष प्रधान समाज की इसग्रह अमानवीय एवं गैरकानूनी शक्ति का विरोध हिन्दी साहित्य की चंद महिला कथाकारों ने किया; जिनमें सबसे बड़ा नाम नासिरा शर्मा का है।

अंत में हम कह सकते हैं कि नासिरा शर्मा नारी जीवन से जुड़ी उन तमाम व्यवस्थाओं एवं पारंपरिक रूढ़िवादी मानसिकताओं के खिलाफ हैं, जो औरत को संवेदनात्मक रूप से तोड़ता है। उनकी निर्णय की स्वतंत्रता एवं अस्मिता के मूल्यों को जहाँ पर भी कम आंका जाता है वहीं से नारी-विमर्श प्रारंभ होता है। लेखिका के सम्पूर्ण कथा साहित्य की स्त्री-पात्र सहज, सचेत, स्वाभिमानी एवं शिक्षित हैं। वे आधुनिकता से सजी-सँवरी एवं परंपरा से संस्कारित हैं किन्तु नारी अस्मिता एवं स्त्रीत्व को जहाँ असुरक्षित देखती हैं वहां वे विद्रोहिणी रूप भी अख्तियार करती है।

चूँकि नासिरा शर्मा एक वर्ग, जाति अथवा सम्प्रदाय की लेखिका नहीं है इसलिए उनके कथा साहित्य को नारी-विमर्श का जामा पहनाना तर्कसंगत नहीं

जान पड़ता बरन वे नारी की अस्मिता एवं स्वतंत्रता का सर्वागीण विकास चाहती हैं अत: उन्हें नारी संवेदना एवं मानवता के मूल्यों की लेखिका कहना सर्वथा उचित होगा। इनकी स्त्री पात्र नारी जाति के 'उत्थान में ही अपना उत्थान मानती हैं इसलिए वे पुरुष से छुटकारा नहीं पुरुष का समर्पणा और साथ चाहती हैं।

साथ भी इस प्रकार का कि उसमें सहयोग का भाव हो। रिश्तों को जोड़े रहना, संबंध विच्छेद न करना एवं नारी जीवन मे शन्ति, संतोष सौहार्द स्थापित करना लेखिका की रचना धर्मिता की सबसे बड़ी विशेषता है किन्तु उपरोक्त तथ्यों को नारी की अस्मिता और स्वाभिमान का सौदा करके प्राप्त करना संभव नही है। इसके लिए औरत और मर्द के मध्य आपसी समझ एवं सम्मान का भाव होना अति आवश्यक है। लेखिका के कथा साहित्य में इस बात पर भी जोर दिया गया है; कि कोई किसी के सीमा का अतिक्रमण न करे क्योंकि जहाँ पर भी सीमा का अतिक्रमण हुआ है वहाँ रिश्तों का कसाव ढ़ीला एवं संबंध विच्छेद की संभावन प्रबल हुई है ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नासिरा शर्मा नारी संवेदना के प्रति सहज एवं पुरुष के साथ औरत को देखने के प्रति संवेदनशील लेखिका हैं। उनका कथा साहित्य आने वाली पीढ़ी को श्रेष्ठ साहित्य एवं बड़ा उदेश्य प्रदान करेगा ।

संदर्भ सूची-

1. डॉ. अमरीश सिन्हा, बोगदे से बाहर, पृष्ठ-98
2. डॉ**.**एम. फिरोज, वाङ्मय, ललित शुक्ल-संवेदना और पीड़ा की चित्रकार मुक्तिकामी रचनाकार: नासिरा शर्मा, पृष्ठ- 108
3. तसलीमा नसरीन, औरत के हक में, पृष्ठ- 19
4. डॉ. अमरीश सिन्हा, बोगदे से बाहर, पृष्ठ - 250-251
5. वही, पृष्ठ- 252

संदर्भग्रंथसूची

आधारग्रंथ / सहायकग्रंथ / कोशग्रंथ एवं पत्र - पत्रिकाएँ

आधार ग्रंथ सूची

नासिराशर्मा के उपन्यासों की सूची

1. शर्मा, नासिरा, अक्षयवट, भारतीयज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरीया, लोदीरोड, नई दिल्ली-110003, प्रथमसंस्करण- 2003
2. शर्मा, नासिरा, कुइयाँजान, समसामयिक प्रकाशन, 3320-21, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2014
3. शर्मा, नासिरा, ज़ीरोरोड, भारतीयज्ञानपीठ, 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड नयी दिल्ली- 110003, संस्करण -2012
4. शर्मा, नासिरा, जिंदा मुहावरे, वाणीप्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण- 1993
5. शर्मा, नासिरा, ठीकरे की मंगनी, किताबघर प्रकाशन, 485556 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण 1989
6. शर्मा, नासिरा, बहिश्तेजहरा (सात नदियाँ एक समंदर) वाणी प्रकाशन, 4695 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1995
7. शर्मा, नासिरा, शाल्मली, किताबघर प्रकाशन, 4855-56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1987

<u>नासिरा शर्मा के कहानी साहित्य की सूची</u>

1. शर्मा, नासिरा, इब्नेंमरियम, किताबघर प्रकाशन, 4855, 56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002 प्रथम संस्करण - 1994
2. शर्मा, नासिरा, इन्सानी नस्ल, किताबघर प्रकाशन, 4855, 56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज - नई दिल्ली-110002 प्रथम संस्करण - 2001
3. शर्मा, नासिरा, खुदा की वापसी, भारतीय ज्ञानपीठ 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003, प्रथम संस्करण - 1999
4. शर्मा, नासिरा, गूँगा आसमान, वाग्देवी प्रकाशन, सुगन निवास, चंदनसागर, बीकानेर - 334001, प्रथम संस्करण 1999
5. शर्मा, नासिरा, दूसरा ताजमहल, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, के - 71, कृष्णनगर, दिल्ली- 110051, प्रथम संस्करण - 2002
6. शर्मा, नासिरा, पत्थरगली, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण- 1986
7. शर्मा, नासिरा, बुतखाना, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डींग, महात्मा - गाँधी मार्ग, इलाहाबाद - 1, प्रथम संस्करण 2002
8. शर्मा, नासिरा, शामी कागज, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण- 1997
9. शर्मा, नासिरा, नासिरा शर्मा की शीर्ष कहानियाँ, किताबघर प्रकाशन, 4855, 56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण- 2001

10. शर्मा, नासिरा, सबीना के चालीस चोर, किताबघर प्रकाशन, 4855-56/ 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण, दिसम्बर-1997

11. शर्मा, नासिरा, संगसार, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली

110002, प्रथम संस्करण- 1993

<u>लेखसंग्रह</u>

1. शर्मा, नासिरा, औरत के लिए औरत, समसामयिक प्रकाशन, 3320-21 जटवाड़ा. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2010
2. शर्मा, नासिरा, राष्ट्र और मुसलमान, किताबघर प्रकाशन, 485556 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 प्रथम संस्करण-2002

<u>समीक्षालेख</u>

(1) शर्मा, नासिरा, किताब के बहाने, किताबघर प्रकाशन, 4855, 56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण

संदर्भग्रंथ सूची

1. अवस्थी, कमलेश, परम्परा और उत्तर आधुनिकीकरण, स्वराज प्रकाशन, 14697/3, 21-ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2006
2. आरजू, मोजम्मिल हसन, भारतीय महिला एवं आधुनिकीकरण, अजय वर्मा - कोमनवेल्थ पब्लिशर्स, 4378 / 4-बी, गली मुरारीलाल, अंसारी रोड, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण
3. कुमार, राकेश, नारीवादी विमर्श, आधार प्रकाशन, पंचकुला (हरियाणा), प्रथम संस्करण - 2011
4. कस्तवार, रेखा, स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006
5. किशोर, राज, स्त्री पुरुष कुछ पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2001
6. खेतान, प्रभा, आओ पेंपे घर चलें, सरस्वतीविहार प्रकाशन, प्रथम संस्करण - 1990
7. खेतान, प्रभा, उपनिवेश में स्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2004
8. खान, डॉ॰एम. फिरोज, नारीविमर्श: दशा और दिशा, आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, ई-10/663, उत्तरांचल कॉलोनी, (निकट संगम सिनेमा), लोनी बार्डर, गाजियाबाद 201102, प्रथम संस्करण - 2010

9. गोयनका, कमलकिशोर प्रेमचंद विश्वकोश (भाग - 2)', प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1981

10. गर्ग, मृदुला, चितकोबरा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण - 1979

11. चव्हाण, डॉ.अर्जुन, विमर्श के विविध आयाम, वाणीप्रकाशन, 21-1, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2008

12. चतुर्वेदी, जगदीश, स्त्रीवादी साहित्यिक विमर्श, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2000

13. चतुर्वेदी, जगदीश्वर, साम्प्रदायिकता का सवाल: नामवरसिंह, राम जन्मभूमि बाबरीमस्जिद विवाद, डब्ल्यू न्यूर्मेन एंड कंपनी लिमिटेड, कलकत्ता, प्रथम संस्करण - 1991

14. जोशी, गोपा, भारत में स्त्री असमानतारू एक विमर्श', हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 10, सिविलरी लाइन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006

15. टंडन, डॉ. प्रतापनारायण, हिन्दी उपन्यासकला, हिन्दी समिति, लखनऊ, प्रथम संस्करण-1970

16. दास, डॉ. श्यामसुंदर, साहित्य लोचन, इंडियन प्रेस प्रयाग, दसवाँ संस्करण-2001

17. द्विवेदी, डॉ.हजारी प्रसाद, साहित्य का साथी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, प्रथम संस्करण-1962

18. दीक्षित, प्रभा, साम्प्रदायिकता का ऐतिहासिक संदर्भ, मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, प्रथम संस्करण-1980

19. डॉ. नगेंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स प्रकाशन, प्रथम संस्करण-1973

20. नवीन, देवशंकर एवं सुशांतकुमार मिश्र, उत्तर आधुनिकताः कुछ विचार, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2000

21. नसरीन, तसलीमा, औरत के हक में, वाणी प्रकाशन, 4695-21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, अठारहवाँ

22. पचौरी, सुधीश, उत्तर आधुनिकता कुछ विचार, वाणी प्रकाशन, 21-1, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2000

23. पचौरी, सुधीश, उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श, वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1996

24. पचौरी, सुधीश, उत्तर आधुनिक दौर में साहित्य, प्रवीण प्रकाशन, 4760-61 (द्वितीय तल), 23, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2006

25. पटेल, डॉ. एम.बी. एवं डॉ. दिलीप मेहरा, साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास, ज्ञान प्रकाशन, 128/90 जी ब्लॉक, किदवई नगर, कानपुर- 208011 संस्करण-2009

26. पालीवाल, कृष्णदत्त उत्तर आधुनिकतावाद और दलित साहित्य, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण- 2008

27. पाण्डे, मृणाल, जहां औरतें गढ़ी जाती हैं, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 2008

28. पाण्डे, मृणाल, स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रा. लि. नई1987

29. पाण्डे, मृणाल, ओ उब्बीरी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. 2003

30. पाण्डे, मृणाल, परिधि पर स्त्री, राधाकृष्ण प्रकाशन लि., नई दिल्ली. 2003

31. पाण्डे, मृणाल, देवी, (समयातीत गाथाएं स्त्रियों की) राधाकृष्ण प्रकाशन लि, नई दिल्ली,1990

32. पाण्डे, मृणाल, यानीकि एक बात थी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली. 2007

33. पाण्डे, भवदेय, बंग महिलाः नारीमुक्ति का संघर्ष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 1999

34. पुष्पा, मैत्रेयी, सुनो मालिक सुनो, परंपरा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008

35. पुष्पा, मैत्रेयी, गुड़िया भीतर गुड़िया, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण-2008

36. पुष्पा, मैत्रेयी, इदन्नमम्, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- 2004

37. पुष्पा, मैत्रेयी, गोमा हँसती है, किताबघर, प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998

38. पुष्पा, मैत्रेयी, चाक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2006

39. पुष्पा, मैत्रेयी, बेतवा बहती रही, किताबघर, प्रकाशन, दिल्ली 1994

40. पुष्पा, मैत्रेयी, अगन पाखी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003

41. प्रकाश, अलका, नारी चेतना के आयाम, इण्डियन प्रेस, प्रा. लि. इलाहाबाद, संस्करण - 2007

42. प्रेमचंद, मुंशी, साहित्य का उद्देश्य, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1967

43. प्रेमचंद, मुंशी, कायाकल्प, सरस्वती प्रेस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1981

44. प्रेमकुमार, जने अजीब नासिरा शर्मा, परमेश्वरी प्रकाशन, बी-109, प्रीतविहार, दिल्ली-110092, प्रथम संस्करण-2011

45. बच्चनसिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1986

46. बलराम, समकालीन हिन्दी का सफर, एज्यूकेशनल सप्लायर्स एण्ड ट्रेडर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1998

47. बशीर, डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर शेख, नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में समसामयिक बोध, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 127 / 1100, डब्ल्यू वन, साकेतनगर, कानपुर- 208014, प्रथम संस्करण- 2011

48. बोउवार, सीमोन, द सेकेंड सेक्स, स्त्री उपेक्षिता (अनुवादक प्रभा खेतान) सरस्वतीविहार प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1990

49. भदौरिया, डॉ. शिवबहादुरसिंह, हिन्दी उपन्यासः सृजन और प्रक्रिया, शैलजा प्रकाशन - कानपुर, प्रथम संस्करण 1981

50. भण्डारी, मन्नू, आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, सं. - 2000 पहली आवृति-2003

51. भण्डारी, मन्नू, मैं हार गई, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण -1976

52. भण्डारी, मन्नू, एक कहानी यह भी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2007

53. मधुरेश, हिन्दी कहानी: अस्मिता की, आधार प्रकाशन,पंचकुला, प्रथम संस्करण

54. मानधाने, डॉ. धनराज, हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, ग्रंथम प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण - 1971

55. माहेश्वरी, सरला, नारी प्रश्न, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण-2007

56. राय, डॉ. गुलाब, काव्य के रूप, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, छठा संस्करण-1967

57. राउत, डॉ. विजय, नासिरा शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता, 125/79-एल, गोविन्दनगर, कानपुर- 208006, प्रथम संस्करण-2010

58. राय, अमृत, प्रेमचंद विविध प्रसंग- (भाग-2), हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1962

59. राजे, डॉ. सुमन, हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003, चौथा संस्करण-2011

60. र्मा, महादेवी, श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डींग, महात्मागाँधी मार्ग, इलाहाबाद - 211001, प्रथम संस्करण - 2008

61. व्होरा, आशारानी, भारतीय नारी: दशा और दिशा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली -02, प्रथम संस्करण -1984

62. व्होरा, आशा रानी नारी, शोषण: आइने और आयाम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली -02, प्रथम संस्करण-1982

63. विपिनचन्द्र और अन्य, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1990

64. शर्मा, रामविलास, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1977

65. शर्मा, रामविलास, भारतीय नवजागरण और यूरोप-1993, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, इ.ए./ 6, मॉडल टाउन, दिल्ली-110005 401, चन्ना चौम्बर, करोलबाग नई दिल्ली-110005, प्रथम संस्करण-1996

66. शर्मा, रामविलास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण -1953

67. शर्मा, भगवती प्रसाद, नवजागरण और प्रताप नारायण मिश्र, राधा पब्लिकेशन्स 4378 / 4 - बी, अंसारीरोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 1994

68. शुक्ल, ललित, नासिरा शर्माः शब्द और संवेदना की मनोभूमि, किताबघर प्रकाशन, 4855-56824, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2010

69. शंभुनाथ, दूसरे नवजागरण की ओर, ज्ञानभारती प्रकाशन, 4/14, रूपनगर, दिल्ली-110007, प्रथम संस्करण- 1993

70. शर्मा, ब्रह्मस्वरूप, आधुनिक हिन्दी साहित्य, मनु प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1996

71. शर्मा, डॉ. नीलम, मुस्लिम कथाकारों का हिन्दी में योगदान, संजय बुक सेन्टर, वाराणसी, प्रथम संस्करण- 2001

72. सिंह, वी. एन., जनमेजय सिंह, आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण, रावत पब्लिकेशन्स, सत्यम एपार्टमेन्ट, सेक्टर-3, जवाहर नगर, जयपुर-302004, प्रथम संस्करण - 2010

73. सुमन, कृष्णकान्त, इक्कीसवीं सदी की ओर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001

74. सिंह, बली, नवजागरण और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, शंकर पब्लिकेशन्स, सी-2941, गली नं. 12 भजन पुरा, दिल्ली-110053, प्रथम संस्करण- 2000

75. सिंघवी, कमला, नारी भीतर और बाहर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण-1985

76. सिंह, ओमप्रकाश, अमृतराय प्रेमचंद के कथा साहित्य में हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्ध, राधा-पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1995

77. सिंह, ओमप्रकाश, प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य और साम्प्रदायिक समस्याएँ, नमन प्रकाशन, 378/4 - बी, अंसारी रोड, दरिया गंज, दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1998

78. सिन्हा, डॉ. अमरीश, बोगदे से बाहर (नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श) शिल्पायन प्रकाशन, पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 10295, लेन नं.1, वेस्ट गोरखपार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032, प्रथम संस्करण - 2012

79. सरकार, सुशोभन, बंगाल रिनेशां एंड अदर एसेज, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1981

80. सन्धु, मधु, महिला उपन्यासकार (21वीं शती की पूर्व संध्या के संदर्भ में), निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण -2000

81. सोबती, कृष्णा, शब्दों के आलोक में, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005

82. सोबती, कृष्णा, मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1984

83. सोबती, कृष्णा, जिन्दगीनामा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1979

84. सोबती, कृष्णा, डार से बिछुड़ी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, तृतीय. सं. 1979

85. सोबती, कृष्णा, हम हशमत-2, राजकमल प्रकाशन, प्र.स. -1999 पहली आवृति-2004

86. सोबती, कृष्णा, सूरजमुखी अंधेरे के, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-1972

87. सोबती, कृष्णा, ए लड़की, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली, संस्करण-1991

88. त्रिपाठी, डॉ. सत्यदेव, हिन्दी उपन्यासः समकालीन विमर्श, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण- 2000

<u>पत्र - पत्रिकाएँ-</u>

1. खान, डॉ. अहमद एम. फीरोज़, वाङ्मय, (त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका), ई-3 अब्दुल्लाह क्वार्टर्स, अमीरनिशां अलीगढ़, जुलाई -2007
2. गुप्ता, अजयकुमार, गगनाञचल, भारतीय संस्कृति सम्बंध परिषद नई दिल्ली, जुलाई - सितम्बर- 2009
3. पाण्डेय, मैनेजर, (संपादक), आधारशिला, नैनीताल, (उत्तराखण्ड), महादेवी विशेषांक - 2008
4. यादव, राजेन्द्र, (संपादक), हंस, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, अगस्त- 2004
5. व्यास, वेद, (संपादक), मधुमती, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, मार्च-अप्रैल- 2012
6. शर्मा, बी.डी., (संपादक), हिमप्रस्थ, (हिमांचल प्रदेश), शिमला, जून- 2012से जनवरी- 2012 तक
7. सागर, शैलेंद्र, कथाक्रम, प्रकाश पैकेजर्स, 257- गौलागंज, लखनऊ, अक्टूबर-दिसंबर -200
8. सहयोगी, हरिनारायण, कथादेश, सहयात्रा प्रकाशन, अगस्त - 2010

<u>ज्ञान- शब्द-कोश</u>

1. कालिका, प्रसाद, वृहत हिन्दी कोश, ज्ञान मण्डल लि., वाराणसी, संस्करण -2001
2. चातक, गोविन्द, आधुनिक हिन्दी शब्दकोश, तक्षशीला प्रकाशन, दिल्ली-1986
3. नवलजी, नालन्दा विशाल शब्द सागर, नालन्दा प्रकाशन, दिल्ली- 1988
4. भारद्वाज, एस. पी., संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, शब्दकोश, राधा-पब्लिकेशन्स, संस्करण -2004
5. वर्मा रामचन्द्र, मानक हिन्दी कोश, प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन -1966
6. सत्यप्रकाश, एवं बलभद्र प्रकाश, मानक हिन्दी अंग्रेजी कोश, मानक प्रकाशन, प्रयाग- 1971

हिंदी कथा साहित्य का आविर्भाव नवजागरण की पृष्ठभूमि में होता है इसलिए यह स्वाभाविक है कि नवजागरण का दबाव इसकी संवेदना और इसके स्वरुप के निर्धारण में अहम् भूमिका का निर्वाह करे। इसीलिए नवजागरण की

सामाजिक चिंताओं का आरंभिक हिंदी उपन्यासों में प्रतिफलन अस्वाभाविक नहीं है। यही कारण है कि नारी आरंभिक दौर से ही हिंदी औपन्यासिक चिंताओं के केंद्र में रही हैइसी क्रम में नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री शक्ति के समावेशी रूप राष्ट्रीय एकता के यथार्थ जैसे अन्यानेक महत्त्वपूर्ण बिंदु प्रमुखता से दिखाई देते हैं। नासिरा शर्मा राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ के क्रम में इस बात का ऐलान करती हैं। कि, "वह आधी दुनिया के लिए नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए लिखती है।"

नासिरा शर्मा की कई ऐसी कहानियाँ हैं जो स्त्री की बुनियादी अस्मिता की दास्तान है जो स्त्री संवेदना के भयानक उठापटक के समय में जो ख़ास संगदिली का सामना करना पड़ता है उसका विस्तृत बयान है। स्त्रियों की अधीनस्थ स्थिति वैसे ही उन्हें दयनीय बनाती और कठिन वक्त में ये मार उन पर दोहरी पड़ती है। इन स्त्रियों के अन्दर उनके बाहरी कोमल स्वरुप के भीतर एक ऐसा मजबूत कोर है जो उन्हें हर तकलीफदेय समय में अपना सिर पानी के ऊपर उठाये रखने में कारगर साबित करता है इन्हीं स्त्री संवेदनाओ का सशक्त मानचित्र खड़ा करना विषय का महत्वपूर्ण बिंदु है।

हमारे द्वारा प्रस्तुत शोध-प्रबंध की कुछ विशेषताएं -

1) हमारे द्वारा इस शोध प्रबंध में स्त्री संवेदना के विभिन्न आयामों को दिखाने का प्रयास किया गया है|
2) प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्रथम बार स्त्री संवेदना के स्वरूप, परिभाषा एवं क्षेत्र का अध्ययन किया गया है|
3) मैंने पारिवारिक,सामाजिक, आर्थिक एवं वैश्विक स्तर पर स्त्री की संवेदनशीलता का यथार्थ अवलोकन किया है|
4) हमारे द्वारा आलोच्य कृतियों के माध्यम से वर्तमान भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति में स्त्री संवेदना की यथार्थ स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है|

5) आलोच्य शोध प्रबंध में नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम विषय को आधार बनाकर आधी आबादी के वैचारिक स्वतंत्रा एवं सहकार की आवाज को बुलंद किया गया है |
6) आलोच्य रचनाओं की प्रमुख समस्याओं को विशेषकर नारी जीवन से संदर्भित तथ्यों को मैंने इस शोध प्रबंध में उजागर करने की कोशिश किया है|
7) इस शोध प्रबंध में समूची स्त्री जाति की संवेदना, सिकन, छटपटाहट एवं उनके योगदान का अध्ययन करने की मैंने कोशिश की है न की जाति या संप्रदाय में विभाजित करके|
8) औरत और मर्द दोनों का समाज में बराबर का दर्जा है प्रस्तुत शोध प्रबंध में इसकी मर्यादा का भी जगह -जगह अध्ययन किया गया है |
9) नारी की वैचारिक स्वतंत्रता, आर्थिक स्वतंत्रता एवं ग्राहस्थय जीवन में उसकी महत्ता कितनी कारगर है इसका भी व्यवरेवार वर्णन किया गया है|
10) नासिरा शर्मा का स्त्री संवेदना के माध्यम से जन जागृति के अवदान का समूचे शोध प्रबंध में मैंने जिक्र करने एवं स्त्री संवेदना के विविध आयामों को उद्घाटित करने की कोशिश की है |

<u>कार्यकारी सारांश की विषय सूची</u>

प्रथम अध्याय : नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(9)व्यक्तित्व
(10) जन्म
(11) पारिवारिक जीवन
(12) शिक्षा एवं परिवेश
(13) विवाह एवं वैवाहिक जीवन
(14) नौकरी एवं व्यवसाय
(15) व्यक्तित्व के अंतरंग एवं बहिरंग पक्ष
(16) पुरस्कार और सम्मान

नासिरा शर्मा का कृतित्व : परिचयात्मक विवरण

(8)उपन्यास

(9)कहानी संग्रह

(10) विशिष्ट कहानियाँ

(11) स्त्री विमर्श परक लेख

(12) अनुवाद, डायरी और रिपोर्ताज

(13) सीरियल लेखन संस्करण और विमर्श

द्‌वितीय अध्याय : स्त्री संवेदना की अवधारणा

(8)संवेदना का आशय

(9)संवेदना अर्थ और परिभाषाएँ

(10) संवेदना का क्षेत्र विस्तार

(11) संवेदना और साहित्य में अंतरसंबंध

(12) संवेदना और नारी मन

तृतीय अध्याय : स्वातंत्रयोत्तर कथा साहित्य में स्त्री संवेदना का विकास: एक सर्वेक्षण

प्रमुख महिला कथाकारों के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना

(11) स्वातंत्रोत्तर कथा साहित्य में स्त्री संवेदना की भूमिका

(12) कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना

(13) मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना

(14) मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना

(15) मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना

(16) ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना

(17) मृणाल पांडे के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना

(18) प्रभा खेतान क्षमा शर्मा एवं अन्य प्रमुख लेखिकाओं के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना का सर्वेक्षण

चतुर्थ अध्याय : नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना

(7)उपन्यास अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

(8)'सात नदियां एक समंदर' उपन्यास में स्त्री संवेदना

(9)'शाल्मली' उपन्यास में स्त्री संवेदना

(10) 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में स्त्री संवेदना

पंचम अध्याय : नासिरा शर्मा के कहानियों में स्त्री संवेदना

(13) पत्थरगली

(14) संगसार

(15) इब्नेमरियम

(16) शामी कागज

(17) सबीना के चालीस चोर

(18) खुदा की वापसी

(19) गूंगा आसमान

(20) इंसानी नस्ल

(21) 'बुतखाना' कहानी संग्रह में स्त्री संवेदन

<u>मुख्य निष्कर्ष-</u>

प्रथम अध्याय : नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय में मैंने नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से परिचय दिया है| व्यक्तित्व के अंतर्गत लेखिका का जन्म, शिक्षा , पारिवारिक स्थिति , व्यवसायिका स्थिति , विवाह एवं वैवाहिक जीवन के बाद

आने वाली पारिवारिक समस्याओं पर बल दिया है कारण की नासिरा शर्मा मुस्लिम परिवार में जन्मी, पाली-बढ़ी हैं और वे विवाह हिन्दू ब्राह्मण परिवार में की है अस्तु पारिवारिक दंश और संवेदनात्मक टूटन का सामना तो करना ही था| अगले कड़ी में लेखिका के बहिरंग व्यक्तित्व एवं पुरस्कार - सम्मान का विवरण प्रस्तुत किया है| प्रथम अध्याय को मैंने दो भागों में विभाजित किया है पहला व्यक्तित्व और दूसरा कृतित्व| कृतित्व के अंतर्गत नासिरा शर्मा के सम्पूर्ण कथा साहित्य का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत हुआ है कारण कि लेखिका के कथा साहित्य में मुझे स्त्री संवेदना के विविध आयामों का मूल्याकन करना था किन्तु नासिरा शर्मा के कुछ प्रमुख कहानियों और तीन उपन्यासों में ही स्त्री संवेदना का मानचित्र दिखाई पड़ता है अस्तु मैंने परिचयात्मक विवरण में सम्पूर्ण कथा साहित्य के मूल थीम को अलग - अलग विश्लेषित किया है जिससे मूल शीर्षक की सोद्देश्यता पूर्ण हो सके और प्रथम अध्याय “नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व और कृतित्व” में लेखिका का सम्पूर्ण परिचय संवेदनात्मक लेखिका के तौर पर हो सके| नासिरा शर्मा एक साहित्यकार होने के साथ - साथ एक कुशल पत्रकार भी हैं जिसके कारण उनका व्यक्तित्व बहुआयामी एवं दृष्टि पैनी हो जाती है | उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है की वे घटना के तथ्य तक जाती हैं और जब तक स्वयं अपनी आँखों से घटना चक्र का अवलोकन और निरीक्षण नहीं कर लेती तब तक उक्त घटना से संदर्भित साहित्य की सर्जना नहीं करती| हाँ यदि मामला उनके समझ में यथार्थ है और समस्यामूलक भी तो चाहे परिणाम कुछ भी हो ऐसी विषयवस्तु को वे अपने साहित्य का माध्यम अवश्य बनाती है | ‘सात नदियां एक समंदर’, ‘जहां फव्वारे लहू रोते हैं’ ईरान ,इराक की क्रांति पर आधारित ऐसी ही कृतियां हैं | इस अध्याय के अंतर्गत नासिरा शर्मा के सभी उपन्यासों एवं कहानियों में स्त्री संवेदना की विषयवस्तु की खीज किया गया है जिस कृति में स्त्री संवेदना का आविर्भाव हुआ है उनको मूल अध्याय में विस्तार से बताया गया है और जिनमें स्त्री संवेदना की प्राप्ति नहीं हुई है उस कृति के मूल थीम का संक्षेप में परिचय दिया गया है|

नासिरा शर्मा का जीवन अनेक उतार - चढ़ाव से गुजारा है जो उनके खुद के द्वारा चुना हुआ जीवन है| परिवार में सांप्रदायिक संगम ने जहां उनके व्यक्तिगत जीवन में संघर्ष उत्पन्न किए वहीं उनके साहित्यिक जीवन में आकर्षण भी कारण की हिन्दू , मुस्लिम , इशाई इन तीन संप्रदायों में लेखिका ने अपना एवं अपने बच्चों का निकाह करवाया जिसके कारण पाठक और आलोचक दोनों को इनके व्यक्तित्व ने काफी प्रभावित किया है| इसी परिचयात्मक विवरण एवं कृतित्व की विशिष्टता का विश्लेषण इस अध्याय में मैंने किया है जो तर्कसंगत है|

द्वितीय अध्याय : स्त्री संवेदना की अवधारणा

प्रस्तुत अध्याय में मैंने संवेदना का आशय, संवेदना अर्थ और परिभाषाएँ, संवेदना का क्षेत्र विस्तार, संवेदना और साहित्य में अंतरसंबंध, संवेदना और नारी मन को रूपायित किया है| संवेदना का अर्थघटन कराते हुए विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानो के मत एवं परिभाषाओं के उदाहरण के रूप में अंकित किया है| संवेदना के कितने आयाम और क्या इसका क्षेत्र विस्तार होगा इस पर भी मैंने मनोविज्ञान एवं साहित्यिक पुस्तकों के माध्यम से तार्किक मूल्याकन किया है| इसी अध्याय में संवेदना और साहित्य एक दूसरे से कैसे अंतर्संबंधित हैं इसका जिक्र करते हुए हिन्दी साहित्य के कुछ प्रमुख रचनाकारों के रचनाओं से उदाहरण अंकित है| अंत में संवेदना और नारी मन की संक्षिप्त चर्चा किया है|

तृतीय अध्याय : स्वातंत्रयोत्तर कथा साहित्य में स्त्री संवेदना का विकास: एक सर्वेक्षण

इस अध्याय में हिन्दी साहित्य की पूर्वपीठिका में ‘महादेवी वर्मा’ ‘सुभद्रा कुमारी चौहान’ ‘बंग महिला’ की स्त्री संवेदना विषयक

अवधारणा को स्पष्ट करने की कोशिश की गई है| इसके पश्चात् कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पांडे ममता कालिया आदि स्वातंत्रोत्तर महिला कथाकारों के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयामों का मूल्यांकन किया गया है| इस अध्याय में यह विश्लेषित हुआ है कि प्रमुख महिला कथाकारों नें किन - किन मुद्दों को अपने कथा साहित्य में नारी मुक्ति हेतु उठाया है| उदाहरण के लिए - पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्री मुक्ति की पक्षधर नहीं है, लैंगिक विभेद नारी उत्थान के लिए सबसे सस्ती विचारधारा है, यौन सुचिता केवल महिलाओं के ऊपर आरोपित हथियार है जिससे जब चाहे तब पुरुष प्रधान समाज औरत पर वार कर सकता है| आत्मनिर्णय एवं वैचारिक स्वतन्त्रता की बंधी हुई बेड़ी भी नारी संवेदना को आहत करती है ऐसे अनेक मुद्दे महिला कथाकारों के कथा साहित्य में देखने को मिलता है जिसका संवेदनात्मक अध्ययन इस अध्याय में किया गया है|

चतुर्थ अध्याय : नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

चतुर्थ अध्याय में नासिरा शर्मा के उन उपन्यासों का सम्यक विश्लेषण किया गया है जिनमें स्त्री संवेदना की विषयवस्तु एवं नारी मुक्ति का विचार उभर कर सामने आया है| लेखिका के तीन उपन्यास 'सात नदियां एक समुंदर' (बहिस्ते जहरा) 'शाल्मली' और 'ठीकरे की मंगनी' में स्त्री संवेदना के विविध आयाम चित्रित हुए है अतः इन्ही तीनों उपन्यासों में नारी की संवेदना, उसकी मुक्ति में बाधक तत्वों का पहचान कर इस अध्याय का संवेदनात्मक मूल्यांकन किया है| 'सात नदियां एक समंदर' उपन्यास की सातों   नायिकाओं के शैक्षिक, वैवाहिक, राजनीतिक, पारिवारिक एवं राष्ट्र प्रेम के लिए अपनी बलि चढ़ा देने की प्रबल संवेदना का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन एवं अनुसंधान इस अध्याय में हुआ है|

'शाल्मली' उपन्यास की नायिका परंपरा के साथ नवाचार से भी भिज्ञ है, अतः विवाह के पूर्व ही वह ऐसे पति, परिवार की आकांक्षी थी कि जो उसके शिक्षा, आर्थिक स्वतन्त्रता, मान-सम्मान को कभी कम न समझे, उसे ऐसा परिवार मिला भी किन्तु पुरुष के अहं भाव की शिकार शाल्मली होती है और वे सभी अमानवीय प्रताड़नाओं से गुजरते हुए अपनी कोख उजाड़ देती है| परंपरावादी होते हुए भी उसने आधुनिकता को धारण किया अपनी नौकरी कायम रखी, एक छत के नीचे होते हुए भी उसने पुरुष को नकार दिया किन्तु संबंध विच्छेद नहीं किया|

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास मुस्लिम परिवार के पुरुष एवं महिला के पारिवारिक, वैवाहिक, शैक्षणिक, नौकरी-पेशा आदि मुद्‌दों से जुड़ा उपन्यास है, इसमें पुरुष और महिला की विरोधाभाषी संवेदना एवं शिकन परिलक्षित हुआ है किन्तु कथा नायिका 'महरुख' त्याग और बलिदान के साथ शसक्त व्यक्तित्व की धनी नायिका है वह पुरुष को मर्यादा रूप में चाहती है जिसपर उसका एकनिष्ट अधिकार एवं प्रेम हो किन्तु उसका सौहर आर्थिक, सामाजिक, पद - प्रतिष्ठा से योग्य किन्तु चापलूस, दुष्चरित्र है महरुख से सच्चा प्रेम भी करता है और सुधर भी जाता है पर कथा नायिका अकेले समाज सेवा में जीवन व्यतीत करना स्वीकार करती है और विवाह से इंकार कर देती है| प्रस्तुत अध्याय मेन स्त्री की अस्मिता की खोज, उसके स्वाभिमान की रक्षा, शोषण के विरुद्‌ध आवाज, आत्मनिर्णय की संकल्पना आदि संवेदनात्मक पहलुओं का तार्किक विश्लेषण किया गया है|

पंचम अध्याय : नासिरा शर्मा के कहानियों में स्त्री संवेदना

इस अध्याय में स्त्री संवेदना की प्रस्थापनाएँ - साहित्य में जो स्त्री संवेदना है उसके अंतर्गत नासिरा शर्मा के कहानियों का संवेदनात्मक अध्ययन किया गया है| आलोच्य लेखिका के कहानी संग्रहों एवं संवेदनात्मक प्रमुख कहानियों में जिस -जिस स्थान पर जिस -जिस कहानी में स्त्री की मुक्ति उसकी स्वतन्त्रता, परंपरा का दबाव एवं परम्पराओं से संघर्षरत स्त्री चरित्र दिखाई पड़ा है उसका संवेदनात्मक अध्ययन हुआ है| नासिरा शर्मा की कहानियों की विषयवस्तु नारीवादी आंदोलन की सीमाओं से बाहर रहकर वृहत्तर सामाजिक, राजनीतिक संवेदना पर विचार करती हैं| इनहोने विभिन्न देशों और समाजों की स्त्रियों एवं उनकी समस्याओं को निकट से देखने -समझने की कोशिश की हैं और इसी कोशिश की यथार्थ परक साहित्यिक धरातल लेखिका का कहानी संग्रह एवं कहानियाँ हैं| प्रस्तुत अध्याय में स्त्री संवेदना के पारिवारिक, वैवाहिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, यौनिक, स्वतन्त्रता में बाधा उत्पन्न करने वाले कारकों की पहचान करके नारी संवेदना के विविध आयामों को रूपायित किया गया है| प्रस्तुत अध्याय में मैंने नासिरा शर्मा के कहानियों का आधार लेकर अन्य लेखिकाओं के कथा साहित्य अथवा स्त्री विमर्श परक पुस्तकों से उदाहरण प्रस्तुत किया है| संवेदना की वस्तुनिष्ठता एवं शोध की मौलिकता हेतु मैंने सबसे ज्यादा लेखिका की कहानियों से ही संदर्भ प्रस्तुत करने की कोशिश किया है|

उपसंहार के अंतर्गत मैंने अपने शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय से लेकर पंचम अध्याय तक के संवेदनात्मक चिंतन का सार निष्कर्ष रूप में रखा है और नासिरा शर्मा कृत हिन्दी कथा साहित्य (उपन्यास एवं कहानी संग्रह) में रूपायित स्त्री संवेदना के विविध आयामों को गहराई से विश्लेषित करने का प्रयत्न किया है|

शोध पद्धतियाँ:

1. विमर्शात्मक विश्लेषण: इसमें कथा के विभिन्न पहलुओं जैसे कि कथानक, पात्र, भाषा शैली आदि का विश्लेषण किया जाता है।

2. ऐतिहासिक संदर्भ: कथा साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भों का अध्ययन करके उसके महत्व और प्रभाव को समझा जा सकता है।

3. मनोवैज्ञानिक विश्लेषण: कथा के पात्रों के मनोविज्ञान और उनके व्यवहार का विश्लेषण करके कथा के गहरे अर्थ को समझा जा सकता है।

4. सामाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषण: कथा साहित्य के माध्यम से समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जा सकता है।

5. तुलनात्मक अध्ययन: विभिन्न कथाओं की तुलना करके उनके समानताओं और अंतरों का विश्लेषण किया जा सकता है। उपरोक्त शोध पद्धतियोंका इस शोध में प्रयोग किया गया है ।

- **संदर्भ ग्रंथ सूची**
  - आधार ग्रंथ सूची
  - सहायक ग्रंथ सूची
  - सहायक शोध प्रबंध
  - कोश ग्रंथो की सूची
  - पत्र एवं पत्रिकाएँ

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ / सहायक ग्रंथ / कोश ग्रंथ एवम् पत्र पत्रिकाएँ

आधार ग्रंथ सूची

नासिरा शर्मा के उपन्यासों की सूची

(1) शर्मा नासिरा, 'अक्षयवट', भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरीया,
लोदी रोड, नई
दिल्ली-110003 प्रथम संस्करण 2003

(2) शर्मा नासिरा, ‘कुइयाँजान’, समसामयिक प्रकाशन, 3320-21, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण -2014

(3) शर्मा नासिरा, ‘ज़ीरो रोड’, भारतीय ज्ञानपीठ, 18,इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड नयी दिल्ली - 110003

(4) शर्मा नासिरा, ‘जिंदा मुहावरे' वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.
प्रथम संस्करण 1993

(5) 'ठीकरे की मँगनी किताब घर प्रकाशन, 485556 / 24, अंसारी रोड, दरियागंजनई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण 1989

(6) शर्मा नासिरा, ‘बहिश्ते जहरा' (सात नदियाँ एक समंदर)वाणी प्रकाशन, 4695 21-ए, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1995

(7) शर्मा नासिरा, 'शाल्मली' किताब घर प्रकाशन, 4855-56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई
दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1987

<u>नासिरा शर्मा के कहानी साहित्य की सूची</u>

(1) शर्मा नासिरा, 'इब्नेमरियम' किताबघर प्रकाशन, 4855, 56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002 प्रथम संस्करण - 1994

(2) शर्मा नासिरा, 'इन्सानी नस्ल' किताबघर प्रकाशन, 4855, 56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज - नई दिल्ली-110002 प्रथम संस्करण - 2001

(3) शर्मा नासिरा, 'खुदा की वापसी' भारतीय ज्ञानपीठ 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली- 110003, प्रथम संस्करण - 1999

(4) शर्मा नासिरा, 'गूँगा आसमान' वाग्देवी प्रकाशन, सुगन निवास, चंदन सागर, बीकानेर - 334001, प्रथम संस्करण 1999 -

(5) शर्मा नासिरा, 'दूसरा ताहमहल' इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, के - 71, कृष्णनगर, दिल्ली- 110051, प्रथम संस्करण - 2002

(6) शर्मा नासिरा, 'पत्थर गली' राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण 1986

(7) शर्मा नासिरा, 'बुतखाना' लोक भारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डींग, महात्मा - गाँधी मार्ग, इलाहाबाद - 1, प्रथम संस्करण 2002

(8) शर्मा नासिरा, 'शामी कागज' वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण- 1997

(9) 'नासिरा शर्मा की शीर्ष कहानियाँ' किताब घर प्रकाशन, 4855, 56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2001

(10) शर्मा नासिरा, 'सबीना के चालीस चोर, किताब घर प्रकाशन, 4855-56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण, दिसम्बर-1997

(11) शर्मा नासिरा, 'संगसार' वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण 1993

लेख संग्रह

(1) शर्मा नासिरा, 'औरत के लिए औरत' समसामयिक प्रकाशन, 3320-21जटवाड़ा. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2010

(2) शर्मा नासिरा, 'राष्ट्र और मुसलमान', किताब घर प्रकाशन, 485556 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002प्रथम संस्करण-2002

समीक्षा लेख

(2) शर्मा नासिरा, 'किताब के बहाने, किताब घर प्रकाशन, 4855, 56 / 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची</u>

(1) 'आधुनिकता एवं महिला सशक्तिकरण', वी. एन. सिंह, जनमेजय सिंह, रावत पब्लिकेशन्स, सत्यम एपार्टमेन्ट, सेक्टर-3, जवाहर नगर, जयपुर-302004, प्रथम संस्करण - 2010

(2) 'आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास', 'बच्चनसिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1986

(3) 'आओ पेपे घर चलें' (उपन्यास) 'प्रभा खेतान, सरस्वती विहार प्रकाशन, प्रथम संस्करण - 1990

(4) 'आधुनिक हिन्दी साहित्य', 'ब्रह्मस्वरूप शर्मा', मनुप्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-1996

(5) 'इक्कीसवीं सदी की ओर', 'सुमन कृष्णकान्त राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पटना, प्रथम संस्करण 2001

(6) 'उत्तर आधुनिकता कुछ विचार', 'सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, 21-1, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2000

(7) 'उपनिवेश में स्त्री', 'प्रभा खेतान', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2004

(8) 'उत्तर आधुनिकतावाद और दलित साहित्य' कृष्णदत्त पालीवाल, वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण - 2008

(9) 'उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श', 'सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1996

(10) 'उत्तर आधुनिक दौर में साहित्य', 'सुधीश पचौरी, प्रवीण प्रकाशन, 4760-61 (द्वितीय तल), 23, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2006

(11) 'उत्तर आधुनिकताः कुछ विचार', 'देवशंकर नवीन', सुशांत कुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2000

(12) 'औरत के हक में' द्द 'तसलीमा नसरीन, वाणी प्रकाशन, 4695-21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, अठारहवाँ

(13) 'कथाकारः नासिरा शर्मा' द्द 'डॉ. ओहाल मोहन विट्ठलराव ए. बी. एस. पब्लिकेशन्स, आशापुरा, सारनाथ, वाराणसी - 221007 (उत्तर प्रदेश), प्रथम संस्करण - 2012

(14) 'काव्य के रूप' द्द (डॉ.) गुलाब राय', प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, छठा संस्करण - 1967

(15) 'कायाकल्प (उपन्यास)' 'प्रेमचंद सरस्वती प्रेस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1981

(16) 'जने अजीब' द्द 'नासिरा शर्मा प्रेमकुमार, परमेश्वरी प्रकाशन, बी-109, प्रीतविहार, दिल्ली-110092, प्रथम संस्करण-2011

(17) 'दूसरे नवजागरण की ओर' 'शंभुनाथ', ज्ञानभारती, 4/14, रूपनगर, दिल्ली-110007, प्रथम संस्करण - 1993

(18) 'नवजागरण और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल', 'बलीसिंह', शंकर पब्लिकेशन्स, सी-2941, गली नं. 12, भजनपुरा, दिल्ली-110053, प्रथम संस्करण- 2000

(19) 'नवजागरण और प्रतापनारायण मिश्र': 'भगवती प्रसाद शर्मा, राधा पब्लिकेशन्स 4378 / 4 - बी, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 1994

(20) 'नारी शोषण: आइने और आयाम' द्द 'आशारानी व्होरा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली - 02, प्रथम संस्करण - 1982

(21) 'नारी प्रश्न:' 'सरला माहेश्वरी', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, इलाहाबाद, पटना, पहला संस्करण - 2007

(22) 'नारी भीतर और बाहर', 'कमला सिंघवी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण - 1985

(23) 'नारीवादी विमर्श' ह 'राकेश कुमार, आधार प्रकाशन, पंचकुला (हरियाणा), प्रथम संस्करण - 2011

(24) 'नारी विमर्श: दशा और दिशा, सं. डॉ॰ एम. फिरोज खान, (डॉ.) शगुफ्ता नियाज, आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, ई-10/663, उत्तरांचल कॉलोनी, (निकट संगम सिनेमा), लोनी बार्डर, गाजियाबाद 201102, प्रथम संस्करण - 2010

(25) 'नासिरा शर्मा के कथासाहित्य में समसामयिक बोध', 'डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर शेख बशीर, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 127 / 1100, डब्ल्यू वन, साकेतनगर, कानपुर- 208014, प्रथम संस्करण - 2011

(26) 'नासिरा शर्माः शब्द और सेवंदना की मनोभूमि' (विवेचनात्मक आलेख), सं. - ललित शुक्ल, किताब घर प्रकाशन, 4855-56824, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2010

(27) 'नासिरा शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व' ह 'डॉ. विजय राउत, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता, 125 / 79-एल, गोविन्दनगर, कानपुर- 208006, प्रथम संस्करण-2010

(28) 'परम्परा और उत्तर आधुनिकीकरण' (हिन्दी उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में), लेखक कमलेश अवस्थी, स्वराज प्रकाशन, 4697/3, 21-ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2006

(29) 'प्रेमचंद विविध प्रसंग (भाग - 2) 'अमृतराय', हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1962

(30) 'प्रेमचंद के कथा साहित्य में हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्ध', 'ओमप्रकाश सिंह, राधा-पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1995

(31) 'प्रेमचंद विश्वकोश (भाग - 2)' ट्ट 'कमलकिशोर गोयनका, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1981

(32) 'प्रेमचंदोत्तर कथासाहित्य और साम्प्रदायिक समस्याएँ ट्ट 'ओम प्रकाश सिंह, नमन प्रकाशन, 378/4 - बी, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1998

(33) 'बोगदे से बाहर' - (नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श), डॉ. अमरीश सिन्हा, शिल्पायन प्रकाशन, पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 10295, लेन नं.1, वेस्ट गोरखपार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032, प्रथम संस्करण - 2012

(34) 'बंगाल रिनेशां एंड अदर एसेज', 'सुशोभन सरकार', पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1981

(35) 'भारतीय महिला एवं आधुनिकीकरण', 'मोजम्मिल हसन 'आरजू', अजय वर्मा - कोमनवेल्थ पब्लिशर्स, 4378 / 4-बी, गली मुरारी लाल, अंसारी रोड, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण

(36) 'भारतीय नवजागरण और यूरोप' 1993 'रामविलास शर्मा', हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, इ.ए. / 6, मॉडल टाउन, दिल्ली-110005 401,चन्ना चौम्बर, करोल बाग नई दिल्ली-110005, प्रथम संस्करण-1996

(37) 'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष', 'विपिनचन्द्र और अन्य', हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1990

(38) 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ 'रामविलास शर्मा', राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 1953

(39) 'भारत में स्त्री असमानता रू एक विमर्श' ट्ट 'गोपा जोशी', हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 10, सिविलरी लाइन, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2006

(40) भारतीय नारी: दशा और दिशा = आशारानी व्होरा, नेशनल, पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली - 02, प्रथम संस्करण - 1984

(41) 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' ह 'रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-1977

(42) 'महिला उपन्यासकार (21वीं शती की पूर्व संध्या के संदर्भ में) 'मधु सन्धु', निर्मल पब्लिकेशन्स दिल्ली, प्रथम संस्करण -2000

(43) 'मुस्लिम कथाकारों का हिन्दी में योगदान', डॉ.नीलम शर्मा', संजय बुक सेन्टर, वाराणसी, प्रथम संस्करण - 2001

(44) विमर्श के विविध आयाम, डॉ. अर्जुन चव्हाण, वाणी प्रकाशन, 21-1, दरियागंज,नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण - 2008

(45) 'श्रृंखला की कड़ियाँ', 'महादेवी वर्मा', लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डींग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद - 211001, प्रथम संस्करण - 2008

(46) 'स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ': 'रेखा कस्तवार', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006

(47) 'स्त्रीवादी साहित्यिक विमर्श' 'जगदीश चतुर्वेदी, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2000

(48) 'स्त्री उपेक्षिता' (The Second Se) 'सीमोन द बोउवार' (अनुवादक प्रभा खेतान), सरस्वती विहार प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1990 प्रथम

(49) 'स्त्री पुरुष कुछ पुनर्विचार', 'राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2001

(50) 'समकालीन हिन्दी का सफर', 'बलराम', एज्यूकेशनल सप्लायर्स एण्ड ट्रेडर्स,दिल्ली, प्रथम संस्करण-1998

(51) 'साहित्यलोचन', 'डॉ. श्यामसुंदर दास, इंडियन प्रेस, प्रयाग, दसवाँ संस्करण - 2001

(52) 'साहित्य का साथी' '(डॉ.) हजारी प्रसाद द्विवेदी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा,
प्रथम संस्करण - 1962

(53) 'साहित्य का उद्देश्य', 'प्रेमचंद', हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1967

(54) 'साम्प्रदायिकता का ऐतिहासिक संदर्भ', 'प्रभा दीक्षित', मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, प्रथम संस्करण-1980

(55) 'साम्प्रदायिकता का सवाल' (नामवर सिंह), (स. जगदीश्वर चतुर्वेदी) राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवाद, डब्ल्यू न्यूर्मेन एंड कंपनी लिमिटेड, कलकत्ता, प्रथम संस्करण - 1991

(56) साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास: डॉ. एम.बी.पटेल / डॉ. दिलीप मेहरा, ज्ञान प्रकाशन, 128/90जी ब्लॉक, किदवईनगर, कानपुर- 208011संस्करण-2009

(57) हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास 'डॉ. सुमन राजे, भारतीय ज्ञानपीठ, 18,इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003, चौथा संस्करण-2011

(58) 'हिन्दी उपन्यास कला''टंडन (डॉ.) प्रतापनारायण हिन्दी समिति, लखनऊ, प्रथम संस्करण-1970

(59) हिन्दी उपन्यासः समकालीन विमर्शत्रिपाठी (डॉ.) सत्यदेव, अमन प्रकाशन, कानपुर,
प्रथम संस्करण - 2000

(60) हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास (डॉ.) धनराज मानधाने, ग्रंथम् प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण - 1971

(61) हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग सिंह त्रिभुवन हिन्दी प्रचारक संस्थान,

वाराणसी, प्रथम संस्करण 1973

(62) 'हिन्दी उपन्यासः सृजन और प्रक्रिया, (डॉ.) शिवबहादुर सिंह भदौरिया, शैलजा प्रकाशन - कानपुर, प्रथम संस्करण 1981

<u>पत्र - पत्रिकाएँ -</u>

1.सं. सागर शैलेंद्र, कथाक्रम, प्रकाश पैकेजर्स, 257-गौलागंज, लखनऊ,अक्टूबर-दिसंबर -2000

2. डा. अहमद एम.फीरोज़, वाङ्मय, (त्रैमासिक हिन्दीपत्रिका), ई-3 अब्दुल्लाह क्वार्टर्स, अमीर निशां अलीगढ़, जुलाई -2007

3. सं. यादव राजेन्द्र , हंस, अक्षर प्रकाशन दिल्ली अगस्त 2004

4. सं. शर्मा बी.डी., हिमप्रस्थ, (हि.प्रदेश) शिमला जून-2012, जनवरी-2012

5. वेद व्यास (सं.), मधुमती, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, मार्च-अप्रैल-2012

6. गुप्ता अजय कुमार, गगनाञ्चल, भारतीय संस्कृति सम्बंध परिषद नई दिल्ली, जुलाई-सितम्बर 2009

7. मैनेजर पाण्डेय (सं.) आधारशिला, नैनीताल, (उत्तराखण्ड), 2008, महादेवी विशेषांक

8. हरिनारायण सहयोगी, कथादेश, सहयात्रा प्रकाशन, अगस्त 2010

ज्ञान- शब्द-कोश

(1) वर्मा रामचन्द्र, मानक हिन्दी कोश, प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन - 1966

(2) नवल जी, नालन्दा विशाल शब्द सागर, नालन्दा प्रकाशन, दिल्ली- 1988

(3) सत्यप्रकाश, बलभद्र प्रकाश, मानक हिन्दी अंग्रेजी कोश, मानक प्रकाशन, प्रयाग- 1971

(4) सं. कालिका प्रसाद, वृहत हिन्दी कोश, ज्ञान मण्डल लि., वाराणसी, संस्करण -2001

(5) चातक गोविन्द, आधुनिक हिन्दी शब्दकोश, तक्षशीला प्रकाशन, दिल्ली-1986

(6) भारद्वाज एस.पी., संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, शब्दकोश, राधा-पब्लिकेशन्स संस्करण - 2004